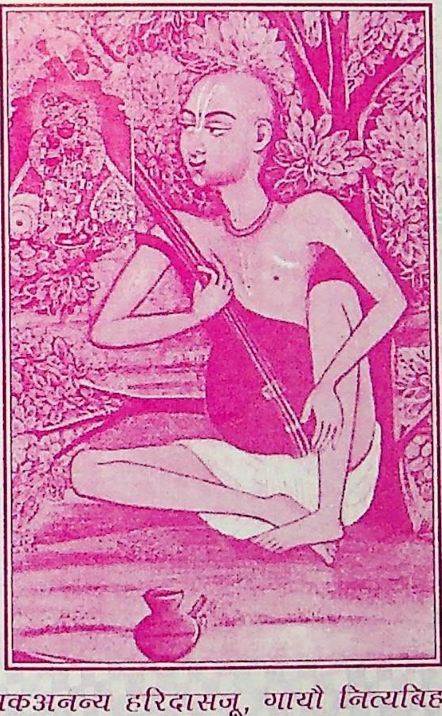
॥ श्रीमन्नित्यनिकुञ्जविहारिणे नमः॥

स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज की वाणी

श्रीकेलिमाल



"रसिकअनन्य हरिदासजू, गायौ नित्यबिहार।"

सम्पादक
जयकिशोरशरण

प्रकाशक
मदनमोहनशरण पुजारी

❐ प्रेरक :

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज

अ.भा.श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

किशनगढ़ (राजस्थान)

❐ सम्पादक :

जयकिशोरशरण

❐ प्रकाशक :

मदनमोहनशरण पुजारी

श्री "श्रीजी" मन्दिर वृन्दावन

❐ प्रकाशन तिथि :

श्रीरामनवमी, वि. सं. २०५८

३ अप्रैल २००१

❐ प्रथम संस्करण :

१००० प्रतियाँ

❐ न्यौछावर :

दस रुपया मात्र

❐ मुद्रक :

श्रीसर्वेश्वर प्रेस

'श्रीजी' मन्दिर

प्रताप बाजार

श्रीवृन्दावन (मथुरा) उ०प्र०

॥ श्रीमत्कुञ्जविहारिणे नमः ॥

स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज

की वाणी

श्रीकेलिमाल



★

॥ आमुख ॥

रसिक-दम्पति श्रीश्यामाश्याम के सर्वसारातिसार मधुरातिमधुर-रसमय नित्य-विहार के सुगायक श्रीललितावतार-स्वामी-श्रीहरिदासजी महाराज का आविर्भाव वि०सं० १५३७ की भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को राजपुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता सनाढ्य कुल भूषण श्रीगंगाधरजी व माता श्रीचित्रादेवी थीं। गुरुवर्य स्वामी श्रीआशुधीरजी से उपनयन-संस्कार तथा दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् गृह-संबन्ध का परित्याग कर आप निधिवन में नित्य एक निश्चित स्थान पर विराजमान होकर नित्य-केलि का अवलोकन किया करते थे। इसी स्थान से श्रीयुगलवर्य का सम्मिलित साकार स्वरूप **'बाँकेबिहारी'** का प्राकट्य हुआ था, जिन्हें आप नित्य नवीन उत्कण्ठा से लाड़ लड़ाया करते थे। संगीत के मूर्तस्वरूप श्रीस्वामीजी सुमधुर स्वर से समय व ऋतु की राग-रागनियों में श्रीप्रियालाल की नित्य-सेवा किया करते थे।

आपके **"अष्टादशसिद्धान्त"** के पद जीवों को जगत् से विमुख तथा श्रीहरि के सम्मुख करने में सक्षम हैं। उज्जवल-रस के पद **"केलिमाल"** आपके भावों की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है, जो समस्त रसिक-समाज के लिये उपादेय-आस्वाद्य है। निकुञ्ज-केलि-रस की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। यह रस युगलवर एवं सतगुरु की कृपा से ही सुलभ हो सकता है।

प्रस्तुत वाणीग्रन्थ का प्रकाशन पुजारी **श्रीमदनमोहनशरण** श्री **'श्रीजी'** मन्दिर, वृन्दावन द्वारा किया गया है। इसके पूर्व भी आपने तेरह लघु ग्रन्थों के प्रकाशन की पावन सेवा की है। यह चौदहवाँ ग्रन्थरत्न **"श्रीकेलिमाल"** श्रीराधाकृष्ण-रसपिपासु प्रेमी-जनों की सेवा में प्रस्तुत है।

रसिकचरणरजाकांक्षी—

जयकिशोरशरण

❀ श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ❀

।। श्रीकुंजविहारीविहारिणी जयति ।।

❀ सम्प्रदाय लिख्यते ❀

॥ श्लोकम् ॥

श्रीमद्धंससमारम्भां सनकादिकमध्यमाम् ।
श्रीनारदयुतां शुद्धां निम्बार्कपरिवृंहिताम् ।
अस्मदाचार्यपर्य्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।

श्रीकुंजविहारी-विहारिनी रूपी जो सुमेरु धीर है सो अखंडित एक रस है। ताको सरूप प्रगट श्रीस्वामी आशुधीरजू ।

प्रगट परचो सुरसुरी को भेंट दई ता समय में श्रीस्वामी जू ने द्वै साखी कही सो साखी लिख्यते ।

* साखी *

बड़ कुल जनमें कहा भयो कहा बसें सुरसरी तीर ।
आसुधीर सन्तन भजें पावन भयो सरीर ।।
धन्य-धन्य तिहुँ पुर भयो गई विप्रन की ऐंठ ।
आसुधीर जग जानियो जब लई सुरसरी भेंट ।।

।। श्रीमत्कुञ्जविहारिणे नमः ।।

❀ श्रीहरिदासः शरणं मम ❀

* श्रीकेलिमाल *

अष्टादश–सिद्धांत के पद

॥ राग विभास ॥

ज्यौंही-ज्यौंही तुम राखत हौ, त्यौंही-त्यौंही रहियतु है हो हरि। और तौ अचरचे पांय धरौं, सु तौ कहौ कौन के पैंड़ भरि ।। जद्दपि कियौ चाहौं अपनौ मन भायौ, सो तौ क्यों करि सकौं जो तुम राखौ पकरि। कहें श्रीहरिदास पिंजरा के जनावर लौं तरफराइ रह्यौ उड़िबे कौं कितोक करि ।।१।।

काहू को बस नाहिं तुम्हारी कृपा तें सब होइ बिहारी बिहारिनि। और मिथ्या प्रपंच काहे कों भाषियै सु तौ है हारिनि ।। जाहि तुमसौं हित तासौं तुम हित करौ सब सुख कारनि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी प्राननिके आधारनि । २।।

कबहूँ-कबहूँ मन इत-उत जात यातें व कौंन अधिक सुख। बहुत भांतिन घत आनि राख्यौ नाहिं तौ पावतौ दुख।। कोटि काम लावन्य बिहारी ताके

मुहाँचुहीं सब सुख लियें रहत रुख। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कौ दिन देखत रहौं बिचित्र मुख ।।३।।

हरि भजि हरि भजि छाड़ि न मान नर-तन कौं। मत बंछै मत बंछै रे तिलु-तिलु धन कौं ।। अनमाँग्यौ आगैं आवैगौ ज्यौं पलु लागत पलु कौं। कहें श्रीहरि-दास मीचु ज्यौं आवै त्यौं धन ह्वै है आपुन कौं ।।४।।

।। राग विलावल ।।

ए हरि मोसौ न बिगारन कौ तोसौ न सँवारन कौ मोहि तोहि परी होड़। कौन धों जीतै कौन धों हारै पर बदी न छोड़ ।। तुम्हारी माया बाजी बिचित्र पसारी मोहे सुर मुनि काके भूले कोड़। कहें श्रीहरि-दास हम जीते हारे तुम, तऊ न तोड़ ।।५।।

बंदे अखतियार भला। चित न डुलाउ आव समाधि भीतर न होहु अगला ।। न फिर दर-दर पै दर-दर न होहु अँधला ।। कहें श्रीहरिदास करता किया सो हुवा सुमेरु अचल चला ।।६।।

हित तौ कीजै कमल नैंन सौं जा हित के आगे और हित लागे सब फीकौ। कै हित कीजै साधु संगति सौं ज्यौं कलमष जाइ सब जीकौ ।। हरि कौ

हित ऐसौ जैसौ रंग मजीठ, संसार हित रंग कसूँभ दिन दुती कौ। कहें श्रीहरिदास हित कीजै श्रीबिहारीजू सौं ओर निबाहू जानि जीकौ ॥७॥

तिनुका ज्यौं बयारि के बस। ज्यौं चाहे त्यौं उड़ाय लै डारै अपने रस॥ ब्रह्मलोक सिवलोक और लोक अस। कहें श्रीहरिदास बिचार देखौ बिना बिहारी नाँहि जस ॥८॥

संसार समुद्र मनुष्य मीन नक्र मगर और जीव बहु बंदसि। मन बयारि प्रेरे स्नेह फंद फंदसि॥ लोभ पिंजर लोभी मरजिया पदारथ चारि खंद खंदसि। कहें श्रीहरिदास तेई जीव पार भये जे गहि रहे चरन आनन्द नंदसि ॥९॥

हरि के नाम कों आलस कत करत है रे काल फिरत सर साँधें। बेर कुबेर कछू नहिं जानत, चढ़्यौ फिरत है काँधें। हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयो हस्ती दर बांधें॥ कहें श्रीहरिदास महल में बनिता बनि ठाढ़ी भई एकौ न चलत जब आवत अंत की आँधें ॥१०॥

देखौ इन लोगनि की लावनि। बूझत नाँहि हरि-चरन-कमल कों मिथ्या जनम गँवावनि॥ जब

जमदूत आइ घेरत हैं तब करत आप मन भावनि। कहें श्रीहरिदास तबहिं चिरजीवौ जब कुंजबिहारी चितावनि ॥११॥

मन लगाय प्रीति कीजै कर करवा सौं, ब्रज-बीथिनि दीजै सोहनी। वृन्दावन सौं वन उपबन सों गुंज-माल हाथ पोहनी ॥ गो गो-सुतन सौं मृगी मृग-सुतन सौं और तन नेकु न जोहनी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं चित्त ज्यौं सिर पर दोहनी ॥१२॥

॥ राग कल्याण ॥

हरि कौ ऐसोई सब खेल। मृग-तृस्ना जग व्यापि रह्यौ है कहूँ बिजौरो न बेल ॥ धन-मद जोबन-मद राज-मद ज्यौं पंछिन में डेल। कहें श्रीहरिदास यहै जिय जानौं तीरथ कैसौ मेल ॥१३॥

॥ राग कान्हरौ ॥

झूठी बात साँची करि दिखावत हो हरि नागर। निसि-दिन बुनत उधेरत जात प्रपंच कौ सागर ॥ ठाट बनाय धरचौ मिहरी कौ है पुरुष तें आगर। सुनि श्रीहरिदास यहै जिय जानौं सपने को सो जागर॥१४॥

जगत प्रीति करि देखी नाहिनें गटी कौ कोऊ।

छत्रपति रंक लौं देखे प्रकृति विरोध बन्यौ नहिं कोऊ ॥ दिन जो गये बहुत जनमनि के ऐसें जाउ जिनि कोऊ । कहें श्रीहरिदास मीत भले पाये बिहारी ऐसौ पावौ सब कोऊ ॥१५॥

लोग तौ भूलैं भलें भूलैं, तुम जिन भूलौ माला-धारी । अपनों पति छाँडि औरनि सौं रति ज्यौं दारनि में दारी ॥ स्याम कहत तेई जीव मोते बिमुख भये सोऊ कौन जिन दूसरी करि डारी । कहें श्रीहरिदास जग्य देवता पितरन कों स्रद्धा भारी ॥१६॥

जौलों जीवै तौलों हरि भजि रे मन और बात सब बादि । द्यौस चारि के हला-भला में तू कहा लेइगो लादि ॥ माया-मद गुन-मद जोवन-मद भूल्यौ नगर विवादि । कहें श्रीहरिदास लोभ चरपट भयौ काहे की लगै फिरादि ॥१७॥

प्रेमसमुद्र रूप रस गहरे कैसें लागैं घाट । बेकारयौं दै जान कहावत जानिपन्यौ की कहाँ परी बाट ॥ काहू कौ सर सूधो न परै मारत गाल गली गल हाट । कहें श्रीहरिदास जानि ठाकुर बिहारी तकत ओटपाट ॥१८॥

॥ इति श्रीअष्टादश–सिद्धान्त के पद सम्पूर्ण ॥

* श्रीकेलिमाल *

उज्ज्वल रस के पद

॥ राग कान्हरौ ॥

माई री सहज जोरी प्रगट भई जु रंग की गौर-स्याम घन-दामिनि जैसें। प्रथमहूँ हुती अबहूँ आगे हूँ रहि हैं न टरि हैं तैसें। अंग-अंग की उजराई सुघराई चतुराई सुंदरता ऐसैं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सम वैस बैसैं ॥१॥

रुचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे। राग-रागिनी अलौकिक उपजत, नृत्य संगीत अलग लाग लागे। राग ही में रंग रह्यौ रंग के समुद्र में दोउ झागे। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी पै रंग रह्यौ रस ही में पागे ॥२॥

ऐसैं ही देखत रहौं जनम सुफल करि मानौं। प्यारे की भाँवती भाँवतीजू के प्रान-प्यारे जुगल-किसोरहि जानौं॥ छिन न टरौं पल होंहु न इत-उत रहौं एक तानौं। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी मन रानौं ॥३॥

जोरी विचित्र बनाई री माई काहू मन के हरन कौं । चितवत दृष्टि टरत नहिं इत-उत मन-बच-क्रम याही संग भरन कौं ॥ ज्यौं घन-दामिनि संग रहत नित, बिछुरत नाँहिन और बरन कौं । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी न टरन कौं ॥४॥

इत उत काहे कौं सिधारति मेरी आँखिन आगैं ही तू आव । प्रीति कौ हित हौं तौ तेरौ जानौं ऐसौ ही राखि सुभाव । अमृत से बचन जिय की प्रकृति सौं मिलै ऐसोई दै दाव । श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कहत री प्यारी प्रीति कौ मंगल गाव ॥५॥

प्यारीजू जैसें तेरी आँखिन में हौं अपनपौ देखत हौं ऐसें तुम देखति हौ किधौं नाँहि । हौं तोसौं कहौं प्यारे आँखि मूँदि रहौं तो लाल निकसि कहाँ जाँही । मोकौं निकसिबे कौ ठौर बतावो, साँची कहौं बलि जाउँ लागौं पाँही । श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी तुमहिं देख्यौ चाहत और सुख लागत काँही ॥६॥

प्यारी तेरौ बदन अमृत की पंक तामें बींधे नैंन द्वै । चित चल्यौ काढ़न कों विकुच संधि संपुट में रह्यौ भ्वै ॥ बहुत उपाइ आहि री प्यारी पै न करत

स्वै। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कहत ऐसैं ही रहौ ह्वै ॥७॥

आवत जात बजावत नूपुर। मेरौ तेरौ न्याव दई के आगैं जो कछु करौ सो हमारे सिर ऊपर॥ निपट निकट मवास ह्वै रही प्यारी पैंड दूपर। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी बिलसौ निहचल धूपर ॥८॥

दृष्टि चेप वर फंदा मन पिंजरा राख्यौ लै पंछी बिहारी। चुनों सुभाव प्रेम-जल अंग श्रवत पीवत न अघात रहे मुख निहारी॥ प्यारी प्यारी रटत रहत छिन ही छिन याकैं और न कछू हिया री। सुनि हरिदास पंछी नाना रंग देखत ही देखत प्यारीजू न हारी ॥९॥

भूलै भूलै हूँ मान न करि री प्यारी तेरी भौहें मैली देखत प्रान न रहत तन। ज्यौं न्यौछावर करौं प्यारी तो पर काहे तें तू मूकी कहत स्याम घन॥ तोहि ऐसैं देखत मोहि अब कल कैसें होइ जू प्राँनधन। सुनि श्रीहरिदास काहे न कहत यासौं छाँड़िव छाँड़ि अपनौंपन ॥१०॥

बात तौ कहत कहि गई अब कठिन परी बिहारी। प्राँन तौ नाँहिने तन अस्त-बिस्त भये कहैं कहा

प्यारी ।। भाँवते की प्रकृति देखत जो श्रम भयौ बहुत हिया री । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंज-बिहारी बाहु सौं बाहु मिलाय रहे मुख निहारी ।।११।।

कुंजबिहारी हौं तेरी बलाइ लेऊँ नीके हो गावत । राग रागिनीन के जूथ उपजावत ।। तैसीयै तैसी मिली जोरी प्रियाजू को मुख देखत चंद लजावत । श्रीहरि-दास के स्वामी स्यामा कौ नृत्य देखत काहि न भावत ।।१२।।

एक समै एकांत बन में करत सिंगार परस्पर दोई । वे उनके वे उनके प्रतिबिंबनि देखत रहत परस्पर भोई ।। जैसे नीके आजु बने ऐसे कबहूँ न बनें आरसी सब झूठी परी कैसीयैव कोई । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी रीझि परस्पर प्रीति नोई ।।१३।।

राधे चलि री हरि बोलत कोकिला अलापत सुर देत पंछी राग बन्यौ । जहाँ मोर काछ बाँधे नृत्य करत मेघ मृदंग बजावत बंधान गन्यौ ।। प्रकृति की कोऊ नाँहि यातें सुरति के उनमान गहि हौं आई मैं जन्यौ । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की अटपटी बानि औरै कहत कछू औरै भन्यौ ।।१४।।

तेरौ मग जोवत लाल बिहारी। तेरी समाधि अजहूँ नहिं छूटत चाहत नाहिनें नेकु निहारी।। औचक आय द्वै कर सौं मूँदे नैंन अरबराय उठी चिहारी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा ढूँढत बन में पाई प्रिया दिहारी ।।१५।।

मानि तू अब चलि री एक संग रह्यौ कीजै। तौ कीजै जो बिन देखै जीजै।। ये स्याम घन तुम दामिनी प्रेम पुंज वरषा रस पीजै। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं हिलिमिलि रंग लीजै।।१६।।

तू रिस छांड़ि री राधे-राधे। ज्यौं-ज्यौं तोकों गहरु त्यौं-त्यौं मोकों बिथा री साधे-साधे।। प्रानिन कौ पोषत हैं री तेरे बचन सुनियत आधे-आधे। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा तेरी प्रीति बाँधें-बाँधे ।।१७।।

आजु त्रन टूटत है री ललित त्रिभंगी पर। चरन-चरन पर मुरली अधर धरैं चितवनि बंक छबीली भुव पर।। चलहु न बेगि राधिका पिय पै जो भयौ चाहत हौ सर्वोपर। श्रीहरिदास के स्वामी कौ समयौ अब नीकौ बन्यौ हिलिमिलि केलि अटल रति भई धूपर ।।१८।।

दिन डफ ताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन-छिन होरी। अति सुकुमार बदन श्रम वरषत भले मिले रसिक किसोर-किसोरी ॥ बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यौ इत उत चाह चलत तकि खोरी। सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सौं लता लपटि कंचन की थोरी ॥१६॥

द्वैलर मोतिन की एक पुंजा पोति कौ सादा नेत्रनि दृष्टि लागौ जिनि मेरी। हाथनि चारि-चारि चूरी पाइन इकसार चूरा चौपहलू इकटक रहे हरि हेरी ॥ एक मरगजी सारी तन तें कंचुकी न्यारी अरु अँचरा की बाँई गति मोरी उरसनि फेरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी या रस ही बस भये हरैं-हरैं सरकनि नेरी ॥२०॥

जोवन रंग रंगीली सोने से गात, ढरारे नैंना कंठ पोति मखतूली। अंग-अंग अनंग झलकत सोहत कानन बीरैं, सोभा देत देखत ही बनै जोन्ह में जोन्ह सी फूली ॥ तनसुख सारो लाही अँगिया अतलस अतरौटा, छबि चारि-चारि चूरी, पहुँचनि पहुँची खमकि बनी, नकफूल जेब मुख बीरा, चौंका कौंधें संभ्रम भूली। ऐसी नित्यबिहारिनि श्रीबिहारीलाल संग, अति आधीन

आतुर लटपटात ज्यौं तरु तमाल कुंजमहल श्रीहरि-दासी जोरी सुरति हिंडोरैं झूली ॥२१॥

राधे दुलारी मान तजि । प्राँन पायौ जात है री मेरौ सजि ॥ अपनों हाथ मेरे माथैं धरि अभैदान दै अजि । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कहत री प्यारी रंग रुचि सौं बलि लजि ॥२२॥

गुन की बात राधे तेरे आगें को जानैं जो जानैं सो कछु उनहारि । नृत्य गीत ताल भेदनि के विभेद जानैं कहूँ जितेक ते देखे झारि ॥ तत्व सुद्ध स्वरूप रेख परमान जे विज्ञ सुघर ते पचे भारि । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नैंक तुम्हारी प्रकृति के अंग-अंग और गुनी परे हारि ॥२३॥

सुघर भये हो बिहारी याही छाँह तें । जे जे गटी सुघर सुर जानपनैं की ते ते याही बाँह तें ॥ हुते तौ अधिक बड़े सबहीं तें पै इनकी कस न खटात याँह तें । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी जकि रहे चाह तें ॥२४॥

राधा रसिक कुंजबिहारी कहत जु हौं न कहूँ गयौ सुनि-सुनि राधे तेरी सौं । मोहि न पत्याहु तौ संग हरिदासी हुती पूछि देखि भटू कहि धौं कहा भयौ

मेरी सौं ॥ प्यारी तोहि गठोंधन प्रतीति छाँड़ि छिया जान दै इतनीब एरी सौं । गहि लपटाइ रहे छैल दोउ छाती सौं छाती लगाय फेराफेरी सौं ॥२५॥

प्यारी तेरी महिमा बरनी न जाय जिहिं आलस काम बस कीन । ताकौ दंड हमें लागत है री भये आधीन ॥ साढ़े ग्यारह ज्यौं औंटि दूजे नवसत साजि सहज ही में जवादि कर्पूर कस्तूरी कुमकुम के रंग भीन । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी रस बस करि लीन ॥२६॥

श्रम जलकन नाँही होत मोती माला कों देहु । देखे बहुत अमोल मोल नाँही तन-मन-धन न्यौछावरि लेहु ॥ रति विपरीत प्रीति कौ आलस तेरे मधि नाइक एहु । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी प्रीति वर मलय वेहु ॥२७॥

नील लाल गौर के ध्यान बैठे श्रीकुंजबिहारी । ज्यौं-ज्यौं सुख पावत नाँही त्यौं-त्यौं दुख भयौ भारी ॥ अरबराइ प्रगट भई जु सुख भयौ बहुत हिया री । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी करि मनुहारी ॥२८॥

आजु की बानिक प्यारे तेरी प्यारी तुम्हारी बरनी न जाइ छबि। इनकी स्यामता तुम्हारी गौरता जैसे सित असित बैंनी रही भुवंगम ज्यौं दबि ।। इनकौ पीतांबर तुम्हारौ नील निचोल ज्यौं ससि कुंदन जेब रबि। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की सोभा बरनी न जाय जो मिलैं रसिक कोटि कबि ।।२९।।

देखि-देखि फूल भई। प्रेम के प्रकास प्रीति के आगै ह्वै जु लई ।। सुनि री सखी बागौ बन्यौ आजु तुम पर त्रिन टूटत है जु नई। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सकल गुन निपुन ताताथेई ताथेई गति जु ठई ।।३०।।

।। राग केदारौ ।।

ऐसी तौ विचित्र जोरी बनी। ऐसी कहूँ देखी सुनी न भनी ।। मनहुँ कनक सुदाह करि-करि देह अद्भुत ठनी। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम तमालै उठँगि (उछँगि) बैठी धनी ।।३१।।

हँसत खेलत बोलत मिलत देखौ मेरी आँखिन सुख। बीरी परस्पर लेत खवावत ज्यौं दामिनि घन चमचमात सोभा बहु भाँतिन सुख ।। श्रुति घुरि राग

कैशरौ जस्ग्यौ अधराति निसा रोम-रोम सुख। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कें मिलि गावत सुर देत मोर भयौ परम सुख ॥३२॥

अद्भुत गति उपजत अति नृत्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी। सकल सुधंग अंग भरि भोरी पिय नृत्तत मुसकनि मुख मोरी, परिरंभन रस रोरी॥ ताल धरैं बनिता मृदंग चन्द्रागति घात बजै थोरी-थोरी। सप्त भाइ भाषा विचित्र ललिता गाइनि चित चोरी॥ श्रीवृन्दावन फूलनि फूल्यौ पूरन ससि त्रिविध पवन बहै थोरी-थोरी। गति विलास रस हास परस्पर भूतल अद्भुत जोरी॥ श्रीजमुनाजल विथकित पुहुपनि वरषा रति-पति डारत त्रिन तोरी। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कौ रस रसना कहै को री॥३३॥

प्यारी जू जब-जब देखौं तेरौ मुख तब-तब नयौ-नयौ लागत। ऐसो भ्रम होत मैं कबहूँ देखी न री दुति कौ दुति लेखनि न कागत॥ कोटि चन्द्र तैं कहाँ री दुराये नये-नये रागत। श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत काम की सांति न होइ न होइ त्रिपति, रहौं निस-दिन जागत ॥३४॥

ऐसी जिय होत जो जिय सौं जिय मिलै, तन सौं तन समाइ ल्यौं तो देखौं कहा हो प्यारी ।। तोही सौं हिलगि आँखें आँखिन सौं मिली रहैं, जीवन कौ यहै लहा हो प्यारी ।। मोकौं इतौ साज कहाँ री हौं अति दीन तुव बस, भुव छेप न जाय सहा हो प्यारी । श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत राखि लै री, बाहु-बल हौं बपुरा काम दहा हो प्यारी ।।३५।।

आजु रहसि मैं देखियत प्यारीजू, एक बोल माँगौं जो लिखि देहु । साखी तेरे नैंन दसन कच कुच कटि नितंब जो लिखि देहु ।। प्रीति द्रव्य रुचि ब्याज परस्पर मन-वच-क्रम करि जो लिखि देहु । श्रीहरि-दास के स्वामी स्यामा प्यारी पै, बोल बुलाय लियौ लिखि देहु ।।३६।।

प्यारी तेरी बाँफनि बान सुमार लागै भौहैं ज्यौं धनुष । एक ही बार यौं छूटत जैसें बादर बरषत इंद्र अनख ।। और हथियार को गनैं चाहनि कनख । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी सौं प्यारी जब तू बोलत चनख-चनख ।।३७।।

काहे तें आजु अटपटे से हरि । अटपटी पाग अटपटे से बंद अटपटी देत आगैं सरि ।। अटपटे पाँइ

परत मैं परखे जब आवत हे इत ढरि । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा जानि हौं पाये आज लाल औरै परि ॥३८॥

काहे कौं मान करत, मोहिब कत दुख देत। बासे की सी दृष्टि लिये रहौं तेरी जीवनि तोहि समेत ॥ अब कछु ऐसी करौ भौंहन टाटी जिनि देहु कहत इत नेत । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा छल कैं गरैं लगायो भई रमेत ॥३९॥

रोम रोम जो रसना होती तऊ तेरे गुन न बखाने जात। कहा कहौं एक जीभ सखी री बात की बात-बात ॥ भानु श्रमित और ससि हूँ श्रमित भये और जुवति जात । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कहत री प्यारी तू राखत प्राँन जात ॥४०॥

तुव जस कोटि ब्रह्मांड विराजै राधे । श्री सोभा बरनी न जाइ अगाधे ॥ बहुतक जनम विचारत ही गये साधे-साधे । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंज-बिहारी कहत री प्यारी ए दिन मैं क्रम-क्रम करि लाधे ॥४१॥

भूलीं (फूलीं) सब सखी देखि-देखि । जच्छ किन्नर नागलोक देवस्त्री रीझि रहीं भुव लेखि-लेखि ॥

कहत परस्पर नारि नारि सौं यह सुंदर्यता अवरेखि-रेखि । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा ए कैसे हूँ चितयें परेखि-रेखि ॥४२॥

पिय सौं तू जोई-जोई करै सोई छाजै । और संघ करै जो तेरी सोई लाजै ॥ तू सुर-ग्यान सब अंग सखी री माँन करत बेकाजै । श्रीहरिदास के स्वामीस्याम को ज्यौं तोमैं बसै तू नित-नित्त विराजै ॥४३॥

सोई तौ वचन मोसौं मानि, तैं मेरौ लाल मोह्यौ री साँवरौ । नव निकुंज सुख पुंज महल में, सुबस बसौ यह गाँवरौ ॥ नव-नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली, नहिं-नहिं यह ब्रज जाँवरौ । श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी पै वारौंगी मालती भाँवरौ ॥४४॥

जो कछु कहत लाड़िलौ लाड़िलीजू सुनिये काँन दै । जो जिय उपजै सो तिहारेई हित की कहति हौं आँन दै ॥ मोंहि न पत्याहु तौ छाती टकटोरि देखौ पान दै । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी जाचक कौं दान दै ॥४५॥

प्यारीजू आगैं चलि आगैं चलि गहबर बन भीतर जहाँ बोलै कोइल री । अति ही विचित्र फूल पत्रन

कीं सेज्या रची रुचिर सँवारी तहाँ तूब सोइल री ॥ छिन-छिन पल-पल तेरीयैं कहानी तुव मग जोइल री । श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत छबीलौ काँम-रस भोइल री ॥४६॥

प्यारी अब सोइ गई । ज्यौं-ज्यौं जगावत त्यौं-त्यौं नहिं जागत, प्रेम रस पान करि भोइ गई ॥ जागत होइ तौं जगाऊँ प्यारे तातैंब परम सचु, रस ही रसिक रस बोइ गई । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा उठिकैं गरैं लगाई, नवल प्रीति सौं नोइ गई ॥४७॥

डोल झूलत दुलहिनी दूलहु । उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत खेल परस्पर सूलहु । बाजत ताल रबाब और बहु तरनी तनया कूलहु । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कौ अनतब नाँहिनें फूलहु ॥४८॥

प्यारी पहिरैं चूनरी । तैसौई लहँगा बन्यौ सिलसिलौ पूरनमासी की सी पूनरी ॥ हौं जु कहत चलिये मनमोहन मानैंगी नहिं घूनरी । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी चरन लपटाने दुहूँन री ॥४९॥

बनो री तेरे चारि-चारि चूरी करनि । कंठसिरी दुलरी हीरनि की नासा मुक्ता ढरनि ॥ तैसौई नैंनन

कजरा फबि रह्यौ निरखि काम डरनि । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी रीझि-रीझि पग परनि ॥५०॥

प्यारी अब क्यौं हूँ क्यौं हूँ आई है। इत तुम श्रमित अधिक मनमोहन मैं कोटि जतन समझाई है ॥ उत हठ करति बहुत नवनागरि तैसीयै नई ठकुराई है। श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कर जोरि मौन ह्वै दूबरे की राँधी खीर कहौ कौनै खाई है ॥५१॥

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हरि रास रच्यौ। कुंज-कुंज द्रुम बेली प्रफुल्लित मंडल कंचन मनिन खच्यौ ॥ नृत्तत जुगलकिसोर जुवतिजन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ। श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नीकेरी आजु प्यारौ लाल नच्यौ ॥५२॥

॥ राग कल्याण ॥

जहाँ-जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे तहाँ-तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाँहीं । बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावति कोऊ बीरी खवावति एकब आरसी लै जाँही। और सेवा बहु भाँतिन की जैसीयै कहैं कोऊ तैसीयै करौं ज्यौं रुचि जानौं जाँहीं । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौं भलैं मनावत दाइ उपाँहीं ॥५३॥

यह कौन बात जु अबही और अबही और अबही औरैं । देवनारि नागनारि और नारि तें न होंहि और की औरैं ।। पाछैं न सुनी अबहूँ आगें हूँ न ह्वै है यह गति अद्भुत रूप की और की औरैं । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी या रस ही बस भये यह भई और की औरैं ।।५४।।

माई ये बसीठ इनके ये इनके और धौं को परै बीच । हाथापाई करत जु श्रम भयौ अंग अरगजा की कीच ।। प्यारीजू के मुख अंबुज कौ डहडहाट ऐसौ लागत ज्यौं अधरामृत की सींच । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी के राग रंग लटपटानि के भेद न्यारे न्यारे जैसैं पानी में पानी नरीच ।।५५।।

कस्तूरी कौ मर्दन अंग में कियैं मुरली धरैं पीतांबर ओढ़ैं कहत राधे हौं ही स्याम । किसोर कुमकुम कौ सिंगार किये सारी चुरी खुभी नेत्रनि दियैं स्याम ।। बाँह गहि लै चले चलिये जू कुंज में चितै मुख हँसैं मानौं एई स्याम । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी छाती सौं छाती लगायें गौर-स्याम ।।५६।।

प्यारी तेरौ वदन चंद देखें मेरे हृदै सरोवर तें

कमोदिनी फूली। मन के मनोरथ तरंग अपार सुंदर्यता तहाँ गति भूली ॥ तेरौ कोप ग्राह ग्रसैं लियैं जात छुड़ायौ न छूटत रह्यौ बुधि बल झूली । श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा चरन बंसी सौं काढ़ि रहे लटपटाइ गहि भुजमूली ॥५७॥

प्यारी तेरौ वदन कनक कोकनद श्रम जलकन सोभा देत री। तामें तिल दृष्टि परत ही मन हरि लेत री ॥ उर तन जाति पाँति प्राननि कौं कटि सौं करि संकेत री। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कहत अचेत री ॥५८॥

बचन दै मान न करौं। मन-वच-क्रम तीन हूँ तें न टरौं ॥ तेरे ही कियैं मान व्याप होत तन कहि कैसैं कै भरौं। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कहत री प्यारी कैसैं कैं लरौं ॥५६॥

कुंजबिहारी नाचत नीके लाड़िली नचावत नीके। औघर ताल धरैं श्रीस्यामा ताताथेई ताताथेई बोलत संग पी के। तांडव-लास और अंग को गनैं जे-जे रुचि उपजति जी के। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कौ मेरु सरस भयौ और रस गुनी परे फीके ॥६०॥

डोल झूलत बिहारी बिहारिनि राग रमि रह्यौ। काहू के हाँथ अधौटी काहू के बीन काहू के मृदंग कोऊ गहैं तार काहू कें अरगजा छिरकत रंग रह्यौ। डाँड़ो छांड़ें खेल बढ़्यौ जु परस्पर नहिं जानियत पग क्यौं रह्यौ। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कौ खेल खेलत काहू न लह्यौ ॥६१॥

हमारौ दान मार्‍यौ इनि। रातनि बेचि-बेचि जात घेरौ सखा जान ज्यौं न पावैं छियौ जिनि॥ देखौ हरि के ऊज उठाइबे की बात राति-बिराति बहू बेटी काहू की निकसति हैं पुनि। श्रीहरिदास के स्वामी की प्रकृति न फिरी छिया छाँड़ौ किनि ॥६२॥

गुन रूप भरी बिधिना सँवारी दुहूँ कर कंकन एक एक सोहै। छूटे बार गरैं पोति दिपति मुख की जोति देखि-देखि रीझे तोहि प्रानपति नैंन सलौनी मन मोहै॥ सब सखि निरखि थकित भईं आली ज्यौं-ज्यौं प्रानप्यारौ तेरौ मुख जोहै। रस-बस करि लीने श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा तेरी उपमा कौं कहि धौं को है ॥६३॥

अजहूँ तू कहा कहति है री मारैं नैंन आरनि। भौहैं ज्यौं धनुष चितवनि बान बाँफिन फौंक धरैं कहत

स्याम प्यारनि ॥ तू ही जीवनि तू ही भूषन तू ही प्रान-धन यारनि । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी सौं मेरु भयौ बिहारिनि ॥६४॥

॥ राग सारङ्ग ॥

प्यारी तू गुननि राइ सिरमौर । गति में गति उपजति नाना राग रागिनी तार मंदर सुर घोर ॥ काहू कछू लियौ रेख छाया तौ कहा भयौ झूठी दौर । कहें श्रीहरिदास लेत प्यारीजू के तिरप लागनि में किसोर ॥६५॥

प्यारी तोपै कितौक संग्रह छबिन कौ, अंग-अंग प्रति नाना भाइ दिखावति । हाथ किन्नरी मध्य सचु पाइ सुलप राग रागिनी सौं तू मिलि गावति ॥ कहा कहौं एक जीभ गुन अगनित, हारि परयौ कछु कहत न आवति । श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत री प्यारी तू जे-जे भाइ ल्यावति ॥६६॥

परस्पर राग जम्यौ समेत किन्नरी मृदंग सुरतार । तीन हूँ सुरन के तान बंधान धुर-धुरपद अपार ॥ बिरस लेत धीरज न रह्यौ तिरप लाग डाट सुर मोरनि सार । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा जे-जे अंग को गति लेति अति निपुन अंग-अंग-अहार ॥६७॥

तोकौं पिय बोलत हैं री लाल ठाढ़े कदंब तर। अबकैं ऐसौ ज्यौ किये कहा होत है री मारि रही कुसुम-सर ॥ कुंजबिहारी अपनौ अंस तासौं क्यौं कीजै छदम वर। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा ढूँढ़त बन में पाई क्रम-क्रम विषम डर ॥६८॥

चलिये छबीली छबीलौ बोलत। आजु की बानिक पर त्रन टूटत है कही न जाय कछु स्याम तोंहि रत। सखी लै चली मनाय ज्यौं हित की आई घत। श्रीहरिदास के स्वामीस्याम बीच ही आइ मिले तन की सुबास सकल भँवर कलमलत ॥६९॥

बेंनी गूँथि कहा कोऊ जानैं मेरी सी तेरी सौं। बिच-बिच फूल सेत पीत राते को करि सकै एरी सौं ॥ बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर ककही सौं। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा नख-सिख लौं बनाई दै काजर नख ही सौं ॥७०॥

प्यारी तेरी पुतरी काजर हूँ तें कारी, मानौं द्वै भँवर उड़े री बराबरि। चंपे की डार बैठे कुंद अलि लागी है जेब अरा-अरि ॥ जब आनि घेरत कटक काम कौं, तब जिय होत डरा-डरि। श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी दोउ मिलि लरत झराझरि ॥७१॥

स्यामकिसोरजू तुमकौं दोऊ रंग रंगित पीतांबर चूनरी। ऐसौ रूप कहाँ तुम पायौ, अहरनिस सोच उधेर-बूनरी ।। मनमोहन सुर ज्ञान सिरोमनि सब अंगनि अंग कोक निपूनरी। श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा तुम्हारी विचित्रताई प्रेम सौं पाईयत रस सूनरी ।।७२।।

चौकी कहां बदलि परी हो प्यारे हरि। लाल पाट की हुती जंगाली ल्याये बरि ।। वह तौ हुती हीरनि खचित पै यह दुरंग पन्ना लालहिं मिलि लैहौं लरि। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की चतुराई रही भरि ।।७३।।

आउ लाल ऐसैं मद पीजै, तेरौ झगा मेरी अँगिया धरि। कुच की सुराही नैंननि के प्याले, दारू द्यौंगी यौं अंकौं भरि ।। अधरनि चुवाइ लेउ सब रस तनिकौ न जान देउ इत उत ढरि। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की सुहबति असर जहाँ आपुन हरि ।।७४।।

डोल झूलत बिहारी बिहारिनि पुहुप वृष्टि होति। सुर-पुर पुर गंधर्व और पुर तिनकी नारि देखति वारति लर मोति। घेरा करति परस्पर सब मिलि

कहूँ न देखी ऐसी जुवती जोति। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारिनि सादा चुरी खुभी पोति ॥७५॥

॥ राग विभास ॥

प्यारीजू बोलत नाहीं कै तू सूता उनींदी, किधौं काहू कछु कह्यौ तेरौ ऐसौई सुभाव। मोंहि तेरे देखे बिन कल न परै कै तू छाँड़ि कुभाव ॥ काहू की झुक हमें देति री उपजत दुभाव। श्रीहरिदास के स्वामी-स्याम कहत ताके बस परे प्रगटत जु भाव ॥७६॥

आलस भीजे री नैंन जँभाति आछी भाँति सुदेस। कर सौं कर टेक अँगुरिन पेंच मानौं ससि मंडल बैठ्यौ अति भाँति सुदेस ॥ मन के हरिबे कौं और सुख नाँहिने कोऊ प्यारी नख-सिख भाँति सुदेस। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी छाती सौं छाती लगाय अंग-अंग सुदेस ॥७७॥

प्यारीजू एक बात कौ मोंहि डर आवत है री मति कबहूँ कुमया करि जाति। पलपल हित वंछत हौं री मति परै भाँति ॥ यह सचु ऐसैंई रहौ री जिनि टरौ तेरी घाति। श्रीहरिदास के स्वामीस्याम

कहत यौं बाढ़ौ ज्यौं पुरइनि जल की रीति तोहि लौं सांति ॥७८॥

प्यारीजू हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा रूसैं क्यौं बनैं । इहां कोउ हितू मेरौ न तेरौ जो यह पीर जनैं ॥ हौं तेरौ बसीठ तू मेरौ और न बीच सनैं । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी कहत प्रीति पनैं ॥७९॥

चूनरी में जाड़ौ लागत है री कीजिये सुख सैन । घरी घरी कें रूसनें पहर मनावत जात मीठे मीठे बैन ॥ उठि सदकैं बलाइ लेउँ प्रकृति यौं न चाहियै चाहियै ज्यौं मैन । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी लपटाइ रहे मानि सबै सुख चैन ॥८०॥

दुहूँन की सहज बिसाँति दोऊ मिलि सतरंज खेलत । उर रुख नैंन चपल अस्व चतुर बराबर झेलत ॥ आतुरता फील पयादे निग्रह फरजी चौंप अनूपम पेलत । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंज-बिहारी सह साह राखें खेलत ॥८१॥

होड परी मोरनि अरु स्यामहिं । आवहु मिलहु मध्य सचु की गति लैहि रंग धौं कामहिं । हमारे तुम्हारे मध्यस्थ राधे और जाहि बदौ, बूझि देखौ

त्रिन दै कहा है यामींहि । श्रीहरिदास के स्वामी कौ चौपर कौ सो खेल इकगुन दुगुन त्रिगुन चतुरगुन री जाके नामींहि ।।८२।।

कहौ यह काकी बेटी कहा धौं कुंवरि कौ नाँउ । तुम सब रहौ री हौं ऊत्तर दैहौं चले किन जाहु ढोटा बाइ बावरौ गाँउ ।। सब सखि मिलि छिरका जू खेलन लागीं तौलौं तुम रहौ री जोलौं हौं न्हाँउ । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी लै बुड़की गरैं लागि चौंकि परी कहाँ हौं जाँउ ।।८३।।

एक समै एकांत बन में डोल झूलत कुंजबिहारी । झोटा देत परस्पर सब मिलि अबीर उड़ावत डारी ।। कबहुँक वे उनके वे उनके हौं दुहुनि की एक सारी । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी बाढ़्यौ रंग भारी ।।८४।।

कुंज-कुंज डोलनि मृदु बोलनि टूटी लर छूटी पोति अति छबि लागत । भँवर गुंजार करत संग डोलत, मानौं मेरु रागिनी के संग लियें रागत ।। जूथ अनेक सुघर जुवतिन के तुम्हारी रीझि पलब नहिं लागत । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी पर तन-मन-धन न्यौछावर करौं का गत ।।८५।।

॥ राग बिलावल ॥

प्रिया पिय के उठिबे की छबि बरनी न जाय सब तें न्यारे। मानौं द्यौस रैन इक ठौरे सोये न भये न्यारे ॥ बार लटपटे मानौं भँवर जूथ लरत परस्पर, कमल-दलनि पर खंजरीट सोभा न्यारे। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी पर कोटि-कोटि अनंग कोटि ब्रह्मांड वारि किये न्यारे ॥८६॥

॥ राग सुघराई ॥

स्यामा-स्याम आवत कुंजमहल तें रगमगे-रगमगे। मरगजी बनमाल सिथिल कटि किंकिनी अरुन नैंन चारौं जाम जगे ॥ सब सखी सुघराई गावत बीन बजावत सब सुख मिलि संगीत पगे। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की कटाछ सौं कोटि काम दगे ॥८७॥

॥ राग मलार ॥

हिंडोरैंब झूलत लाल दिन दूलहु दुलहिनि बिहारिनि देखौ री ललना। गौर-स्याम छबि अति दुति बहु भाँति री बलना ॥ नीलांबर पीतांबर अंचल चलत धुजा फहराति कलना। श्रीहरिदास के स्वामी-स्यामा कुंजबिहारी बिहारिनि अबिचलना ॥८८॥

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै बोलति मोरनि। नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ, श्रीवृंदावन आछी नीकी मेघनि की घोरनि ॥ आछी नीकी भूमि हरी-हरी आछी नीकी, बूढ़नि की रेंगनि काम किरोरनि। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा के मिलि गावत राग मलार जम्यौ किसोर-किसोरनि ॥८९॥

सुबोल बोलिये जू मान न करिहौं, आये दिन पावस के सचु के। घरी-घरी के रूसनें क्यौं बनें ते बोल बोलियै जु मन-क्रम-वच के ॥ भयौ है बँधान बहुत जतननि करि बिसरे गुन गस के। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी प्यारी बस के ॥९०॥

यह अचरज देख्यौ न सुन्यौ कहूँ नवीन मेघ संग बीजुरी एक रस। तामें मौज उठत अधिक बहु भाँति लस ॥ मन के देखिवे कौं और सुख नाँहिने चितवत चितहिं करत बस। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी बिहारिनिजू कौ पवित्र जस ॥९१॥

बूँदैं सुहावनी री लागत मति भीजै तेरी चूँनरी। मोहिं दै उतारि धरि राखौं बगल में तू न री। लागि लपटाइ रहैं छाती सौं छाती जो न आवै तोहि

बौछार की फूनरी । श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत बीजुरी कौंधें करि हाँ हूँ न री ॥९२॥

भीजन लागे री दोऊ जन । अँचरा की ओट करत दोऊ जन ॥ अति उन्मत्त रहत निसि-बासर राग ही रंग रँगे दोऊ जन । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी, प्रेम परस्पर नृत्य करत दोऊ जन ॥९३॥

नदित मन मृदंगी रास भूमि सुकांति अभिनै सु नव गति त्रिभंगी । धापि राधा नटति ललिता रसवती नागरी गा इतेग्रि नाभि तान तुंगी ।। रसद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका निसि-दिन रंग रंगी । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी संगीत संगी ॥९४॥

दाँमिनि कहत मेघ सौं हमारी उपमा दैंहि ते झूठे एई मेघ बीजुरी साँची । जिन-जिन हमारी उपमा दीनी तिन-तिन की मति काँची ॥ ऐसी कहूँ सुनी जु बूँद तें कन न्यारौ ता पटतर क्यौं दीजै समुद्र राँची । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की अटल-अटल प्रीति माँची ॥९५॥

॥ राग गौड़ ॥

नाँचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं

रिझावत । तैसीयै कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसीयै मेघ गरजि मृदंग बजावत ।। तैसीयै स्याम घटा निसि सी कारी तैसीयै दाँमिनि कौंधि दीप दिखावत। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी रीझि राधे हँसि कंठ लगावत ।।९६।।

हरि के अंग कौ चंदन लपटानौं तन तेरे देखियत जैसैं पीत चोली । मरगजे अभरन वदन छिपावति छिपै न छिपायें मानौं कृष्ण बोली ।। कहुँ अंजन कहुँ अलक रही खसि, सुरति रंग की पोटैं खोली। श्रीहरिदास के स्वामीस्याम मिलत बिहारिनि हार न रह्यौ कंठ बिच ओली ।।९७।।

।। राग बसन्त ।।

कुच गडुवा जोबन मौर कंचुकी बसन ढाँपि लै राख्यौ बसंत । गुन मंदिर रूप बगीचा में बैठी हैं मुख लसंत ।। कोटि काम लावन्य बिहारी जाहि देखत सब दुख नसंत। ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी तिनकौं भरन आई मिलि हसंत ।।९८।।

कुंजबिहारी कौ बसंत सखि चलहु न देखन जाँहि । नव बन नव निकुंज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माँहि ।। बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली

अंग न माँहिं । सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं छिरकत छैल छुवाँहिं ॥९९॥

चलिरी भीर तें न्यारेई खेलैं । कुंज-निकुंज मंजु में झेलैं ॥ जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ, तिहिं बन चलि मिलि केलैं । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा प्रेम परस्पर बूका बंदन मेलैं ॥१००॥

अबकैं बसंत न्यारेई खेलैं, काहू सौं मिलि न खेलैं तेरी सौं । दुचिते भये कछू न सचु पाइयत तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं ॥ देखैगी जु रंग उपजैगौ राग रागिनीन के फेरा-फेरी सौं । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी राग ही में रंग उपजैगौ एरी सौं ॥१०१॥

रहौ रहौ बिहारीजू मेरी आंखिन में बूका मेलत हौ कित अंतर होत मुख अवलोकन कौं । और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहत मिसि कैं पैयाँ लागौं पन-पन कौं ॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सु तौ कोटि वर है तन कौं । श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख, कहाँ पाइयत ऐसौ सुख मन कौं ॥१०२॥

॥ राग गौरी ॥

सौंधे न्हाइ बैठी पहिरि पट सुंदरि जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवति अलकैं। कर नख सोभा कल केस सँवारति, मानौं नव घन में उडगन झलकैं ॥ विविध सिंगार लियैं आगैं ठाढ़ी प्रिय सखी, भयौ भरु आनि रतिपति दल दलकैं। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी की छबि निरखत लागत नाँहीं पलकैं ॥१०३॥

॥ राग गौरो ॥

चलौ सखी कुंजबिहारी सौं मिलि, चित दै देखैं उनकी भाँवती। सुंदर सौं सुंदरि मिलि खेलत कैसैं धौं गाँवती ॥ औचक आइ परी सखी तहाँ पिय पै पाँइ चँपावती। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंज-बिहारी सौं मिलि पौढ़ी तन-मन राँवती ॥१०४॥

राधा-रसिक कुंजबिहारी खेलत फाग, सब जुवती जन कहत हो हो होरी। भरत परस्पर काहू को काहू न सुधि, हँसिकैं मन हरत मोहन गौरी ॥ कर सौं करब जोरि कटि सौं कटिब मोरि, करत नृत्य काहू न रुचि थोरी। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंज-बिहारी फिरत न्यारेई न्यारे सब सखियन कौ दृष्टि बचावत तकितब खोरी ॥१०५॥

नव निकुंजगृह नवल आगैं नवल बीना मध्य राग गौरी ठटी । मनौं दस इंदु पीयूष बरषत सुखद चपल करजावली दृष्टि पिय की जटी ।। रीझि रीझि पिय देत भूषन बसन दाम उर रसन दसननि धरत निरखि सारंग कटी । रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग-अंग मिलत, अतन उदोत करत सुरति आरंभटी ।।१०६।।

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े । हाँगत जोर सहित जैसौं जाकैं डाँडोब गहैं गाढ़े ।। बिच-बिच प्रीति रहसि रसरीति की राग रागिनीन के जूथ बाढ़े । श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी राग ही के रंग रँगि काढ़े ।।१०७।।

झूलत डोल श्रीकुंजबिहारी । दूसरी ओर रसिक राधावर नागरि नवल दुलारी ।। राखे न रहत हँसत कहि-कहि प्रिया, बिलबिलात पिय भारी । श्रीहरिदास के स्वामीस्याम कहत री प्यारी, अबकैं राखि हा हा री ।।१०८।।

कौन प्रकृति तिहारी छिया तुमहिं मिलत बेगि भोर ह्वै जात । अथवत निमेष होइ पह फाटी देखियत पहिली सह मात ह्वै जात ।। आवत जात भारौ परै पीतौ मरि जात । श्रीहरिदास के स्वामी

तुम्हारे माथैं त्रिन कितौक सुख जात ॥१०६॥

॥ राग नट ॥

जुग कवनी बैस किसोर दोऊ निकसि ठाढ़े भये सघन बन तें। तन-तन में बसत मन-मन में लसत सोभा बाढ़ी दुहुँ दिसि, मानौं प्रगट भई दामिनि घन-घन तें॥ मोहन गहर गंभीर बदत पिक बानी, उपजत मानौं प्रिया के वचन तें। श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी, ऐसौ को जाकौ मन लागै अन तें ॥१०१॥



स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज की 'प्रशस्ति'

नमो नमो श्रीहरिदास वृंदाविपिन-वास, वर प्रान सर्वसु बाँकेबिहारी।
स्यामा-स्याम जुगल रूप-माधुर्य के, रसिक रिझवार प्रेम-अवतारी।।
परम वैराग्य-निधि बसत निधिवन सदा, भावनालीन सुप्रवीन भारी।
कामना कल्पतरु सकल संताप हरु, 'अग्रदास अलि' कल्याणकारी।।

- स्वामी श्रीअग्रदासजी महाराज

जुगल नाम सौं नेम जपत नित कुंजबिहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी-सुख के अधिकारी।।
गान-कला-गंधर्व स्याम-स्यामा कौं तोषैं।
उत्तम-भोग लगाइ मोर मरकट तिमि पोषैं।।
नृपति द्वार ठाढ़े रहैं दरसन आसा जास की।
आसुधीर उद्योत करि रसिक छाप हरिदास की।।

- स्वामी श्रीनाभादासजी

रसिक अनन्य हरिदास जू, गायौ नित्य-बिहार।
सेवा हू में दूरि किये, बिधि-निषेध जंजार।।
सघन निकुंजनि रहत दिन, बाढ़्यौ अधिक सनेह।
एक बिहारी हेत लगि, छाँड़ि दिये सुख देह।।
रंक छत्रपति दुहुँनि की, धरी न मन परवाह।
रहे भीजि रस-माधुरी, लीनें कर करवाह।।

- श्रीहित ध्रुवदासजी

षोडशाक्षरी-युगलनाम-महामंत्र-संकीर्तन

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, कृष्णकृष्ण राधेराधे।
राधेश्याम राधेश्याम, श्यामश्याम राधेराधे॥

(कृपया अधिक से अधिक जप करें)



ग्रन्थ प्राप्ति स्थान

श्री "श्रीजी" मन्दिर

प्रताप बाजार, वृन्दावन

फोन : (0565) 443152